एही साइत हजूर की, तहां बेर नहीं लगार ।
चार घड़ी दिन पीछला, ए जाने परवरदिगार ॥१४॥

परमधाम में तो अभी एक पल भी नही हुआ है । वही चार घड़ी पीछला दिन ज्यों का त्यों है कि सारी ब्रह्मसृष्टियां खेल देखकर तथा सारे ब्रह्मांड को मुक्ति देकर परमधाम पहुंचेगी । तब भी वहां वही साइत और वही पल होगा । इस साइत के सब भेद अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ही जानते है ।

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए बेवरा तीनों का कहूया तुम ।
कहूं आगे और मजल की, जो दिखाया खेल हुकम ॥ १५॥

अब आप हक श्री प्राणनाथ जी महाराज फरमाते है कि तीनों सृष्टियों का बेवरा आपके सामने कहा है । अब इस खेल में श्री राज जी महाराज ने जुदा जुदा मंजिल में क्या क्या खेल दिखाया है उसके बारे में कहता हूं ।

(प्रकरण १९ चौपाई ८७७)

फेर कहों श्री जीय की, जो बीतक बीच इसलाम ।
लड़ाई करी दज्जाल सों, सो कहों मुकाम और ठाम ॥१॥

अब फिर श्री जी साहिब जी की बीतक जो श्री निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर करने में बीती और कैसे माया ने उसमें रूकावटें डाली, किस किस प्रदेश में और कहां २ क्या हुआ, वह मैं कहता हूं ।

जब जाम वजीर बिदा दई, देख कसाला दुख ।
हुआ हुकम हक सुभान का, अब ए पावें सुख ॥२॥

गुजरात से फांसी रूपी घोर दुःख को दिखा कर श्री राज का हुकम उन्हें अखंड सुख देने के लिये हुआ और वे दीप बन्दर पहुंचे ।

तब गुजरात से आये दीप में, भाई साथी जयराम के घर ।
उठ मिले आनन्द सो, बड़ो सुख पायो देखकर ॥३॥

तब गुजरात से चलकर दीपबन्दर में भाई जयराम कंसारा के घर पहुंचे । जयराम भाई उन्हें देख कर बड़े आनन्द के साथ उठकर मिले तथा आदर सत्कार किया ।

लगा खेम कुसल पूछने, कहां से पधारे श्री मेहेराज ।
हमसों कहो हकीकत, इत पधारे कौन काज ॥४॥

जयराम भाई ने श्री मेहेराज ठाकुर से सब कुशल क्षेम पूछा कि आप कहां से आए है तथा यहां किस काम के लिये आये हैं । इसकी हकीकत बताइये ।

Nijanand App

तब जवाब दिया श्री जी नें, हम आए तुम्हारे काज ।
हमको भेजा हक नें, हुकम दिया श्री राज ॥५॥

तब श्री जी साहिब ने उत्तर दिया कि मैं आपकी आतम को जगाने के लिये आया हूं। मुझे श्री राज जी महाराज ने आपको जगाने के लिये ही भेजा है ।

ढूंढ़ काढ़ो साथ को, माया करो खबर ।
याद करो निजधाम को, चलो राह इस्लाम पर ॥६॥

मुझे श्री राज जी महाराज ने हुकम दिया है कि अपने सुन्दरसाथ परमधाम को भूल गये हैं, उनको परमधाम का ज्ञान देकर माया से जगाओ। तथा अपने निजानन्द सम्प्रदाय की राह पर चलाओ।

हुई चरचा इन समें, श्री देवचन्द्र जी सों लेके ।
साथ की खबर पूछते, एते दिन दीपे में रहे ये ॥७॥

अब सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के धाम चलने से लेकर आगे की सब बातों पर चर्चा हुई तथा श्री जी ने जयराम भाई से पूछा कि तुम इतने वर्षों से दीप बन्दर में रहे हो। तुमने किस-किस सुन्दरसाथ को जगाया है ।

कौन साथ तुम काढ़िया, किन को राह बताइ ।
तुम साथी श्री देवचन्द्र जी को, नूर रोसनी न दिल में ल्याई ॥८॥

किस किस आतम को परमधाम का तारतम ज्ञान सुनाकर माया से निकाला है तथा परमधाम की राह दिखाई है तुम तो मेरे से पहले ही सद्गुरू महाराज के चरणों में आये थे तथा पहचान करके तारतम लिया था फिर भी तुम्हारी आतम जाग्रत नही हुई ।

तुमको ऐसा ना चाहिए, कर बैठो एती अंधेर ।
श्री धाम धनी को देखके, तुमको सरम न आई फेर ॥९॥

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होकर तुम अपने धाम धनी को भूल बैठे हो, ऐसी अज्ञानता तुम्हें नही करनी चाहिए। धाम धनी की पहचान करके भी तुम फिर माया में भूल गए। क्या तुम्हें शर्म नही आई ।

एक पाती कबहूं ना लिखी, के हमारो नातो श्री धाम ।
श्री देवचन्द्र जी सफर किया, तुम कबहूं न आये तिन ठाम ॥१०॥

जब से तुमने तारतम लिया है तब से आज दिन तक तुमने परमधाम के नाते से नवतनपुरी में पत्र तक नही डाला है। तथा सतगुरू श्री देवचन्द जी के धाम चलने पर भी अफसोस के लिए वहां नही आये।

Nijanand App

बैठे बिहारी जी चाकले, ना गये तुम तित ।
कबहूं खबर न पूछो तिनकी, क्या हाल तुम्हारा बखत ॥११॥

और फिर जब बिहारी जी महाराज को गादी पर बैठाया गया इस अवसर पर भी आप नही आये और न ही आपने पत्र डाला, माया में आकर आपकी ऐसी दुर्दशा हो गयी है ।

मिल गये माया मिने, जाने अनादि के इत ।
हम कबहूं न जायेंगे, श्री धाम लीला मों तित ॥१२॥

तुम तो ऐसे माया में भूल गए हो कि जैसे आदि अनादि से यहीं पर रहने वाले हो और यही समझ बैठे हो कि परमधाम मूल मिलावे में कभी भी नही जायेंगे ।

तुम को ऐसा न चाहिऐ, देखो अपनी बुनियाद ।
तुम श्री देवचन्द्रजी के साथी, गिरोह पैगम्बर आद ॥१३॥

तुम परमधाम की खास आतम हो तथा सतगुरू श्री देवचन्द्र जी के साथी हो । तुम को माया के जीव की तरह से धनी को भूल नही जाना चाहिए ।

तिन सामे तुम ना देखया, के खाविन्द हमारा कित ।
हम आये माया देखने, क्यों ऐसा भूलो इत ॥१४॥

मोह सागर के जाल में फंस कर तुम्हें यह याद भी नही आया कि हमारे धनी परमधाम में रहते हैं हम खेल देखने के लिए ही केवल यहां आये हैं और माया के जीवों की तरह तुम्हें बेसुध नही हो जाना चाहिए ।

यों वचन खण्डनी के, श्री जी कहे बेसुमार ।
कै दृष्टान्त देके किया, जीवता खबरदार ॥१५॥

इस प्रकार श्री जी ने खंडनी के बेसुमार शब्द कहे और कई दृष्टान्त देकर उसको निजघर व निजस्वरूप की याद दिला कर सावधान किया ।

कब लों कासा कूटेगा, कब लों हथौड़ा एहरन ।
कब लों घर में बैठेगा, आई सिर पर क्यामत रोसन ॥१६॥

हे जयराम भाई । तू अपनी ओर देख । तुम्हारे मरने के दिन नजदीक आ गए हैं । कब तक तू एहरन और हथौड़ा लेकर कांसा कूटेगा । क्या तुमने इसी घर को अखंड बना रखा है ।

Nijanand App

एह मुद्दाह चौदह तबक, सो अब होत है नास ।
कछु सरम न आई हक की, तुम कहावत गिरोह खास ॥१७॥

चौदह तबक की हकीकत यह है कि यह नाशवान है । तुम परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहला कर इतने बेशर्म हो गए हो कि तुम्हें कभी भी श्री राजजी महाराज की याद नही आई ।

बहुत दिन मुरदार में, तुम किया गुजरान ।
अब केते दिन जीओगे, कछु घर की करो पहिचान ॥१८॥

बहुत दिनों तक तुमने इस मुरदार दुनियां में जीवन बिताया । अब कितने दिन जीयोगे । अपने घर की कुछ तो पहचान करके धनी को याद करो ।

कोई न अघाया इनमें, चचोड़त ठौर मुरदार ।
श्री धाम धनी सुख छोड़ के, क्या हमेसा होओगे ख्वार ॥१९॥

आज दिन तक किसी को इस माया से तृप्ति नही हुई जिस प्रकार एक कुत्ता सूखी हड्डी को लेकर चबाता है तथा उसी में खुश होता है उसी प्रकार तुम भी इस मुरदार दुनियां को चंचोड़ रहे हो अर्थात अपने ही खून को पीकर खुश हो रहे हो । क्या अखंड परमधाम तथा श्री राजजी महाराज के सुखों को छोड़ कर जीवों की तरह इस दुनियां में रहोगे ।

एह इन्द्रियन के स्वाद को, लगा सब संसार ।
ए मोह के जीव रहेंगे मोह में, तुम को तो चाहिए विचार ॥२०॥

इस संसार के सारे जीव तो अपनी इन्द्रियों के स्वाद के वास्ते ही इस मोह सागर में डूबे पड़े हैं । तुम तो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो । तुम को तो इस पर विचार करना चाहिए ।

तुमसे माया जीव से, एता भी न होय फरक ।
श्री धाम धनी की जिकर में, हुआ चाहिये गरक ॥२१॥

माया के झूठे जीवों से कुछ तो तुम्हारे अन्दर अन्तर होना चाहिए । तुम्हें सदा अपने धनी की वाणी में ही लगे रहना चाहिए ।

सो बोय न आवत तुममें, ना चरचा चितवन ।
ना साथ मिलावा सैंयन, ना दिल को किया रोसन ॥२२॥

ब्रह्मसृष्टि वाले वे गुण तुम्हारे अन्दर नही हैं चर्चा और परमधाम की चितवनी के बारे में तुम्हें एक शब्द भी पता नही है । न ही तुमने मूल मिलावे की बैठक को याद करके अपनी आतम को जगाया है ।

Nijanand App

ए बचन सुनके रोइया, भूल मानी अपनी सब ।
मुझसे कछु ना हुआ, करो धिक्कार आपको तब ॥२३॥

ऐसी हकीकत भरी खण्डनी के शब्दों को सुनकर जयराम भाई रोकर श्री जी के चरणों में गिर पड़ा तथा अपनी भूल को स्वीकार किया । हे मेरे धाम धनी ! हकीकत में मुझसे कुछ भी नही हुआ है । मेरे जीवन पर धिक्कार है, लानत है ।

हमको इन माया मिनें, याद न आया धाम ।
हम भूले तहकीक, आड़े माया के काम ॥२४॥

इस माया के मोह जाल में फंसकर मुझे कभी भी श्री राज जी तथा परमधाम की याद नही आई । इस माया के लोभ में फंसकर मैं निश्चय ही भूल गया था ।

ना जानी हम निसबत, ना कछु भई पहिचान ।
ना तो हम ऐसा क्यों करें, जो कछु बोए होती ईमान ॥२५॥

मुझे कभी भी श्री राज जी महाराज और सुन्दरसाथ से निसबत की याद नही आई और न मैं उनके स्वरूप को पहचान ही सका । यदि मेरे अन्दर कुछ भी ईमान आ जाता तो मुझसे कभी भी भूल नही होती।

अब मेहर देखी श्री राज की, जो भेज दिये तुम को ।
हमारी तरफ न देखिया, हम तो डूबे संसार मों ॥२६॥

बेशक श्री राज जी महाराज के चरणों से मेरी अखंड निसबत है इसलिये मेरी आतम को जगाने के लिये उन्होंने आपको भेज दिया है । उन्होंने मेरे अवगुणों को नहीं देखा हकीकत में मैं माया मोह में हीं भूल गया था ।

इन भांत की चरचा भई, सब मिला घर का साथ ।
सब आये चरनों लगे, जो धनियें पकड़े हाथ ॥२७॥

इस प्रकार की अलौकिक चर्चा सुनने के बाद घर के सब सदस्यों ने श्री जी की पहचान करके तारतम लिया । क्योंकि इन पर श्री राज जी महाराज ने पूरी मेहर करके अपने चरणों में ले लिया था ।

आदर रसोई का किया, नहवाए श्री मेहेराज ।
बैठाये रसोई मिने, अरूगाये श्री राज ॥२८॥

जयराम भाई ने स्वामी जी को नहला धुला कर रसोई का आदर किया तथा बड़े भाव से उनके स्वरूप की पहचान कर थाल आरोगाया ।

Nijanand App

प्रसाद सबों ने लेय के, करी पौढ़ने की अरज ।
हम ना आये पौढ़ने, हमारी तो और गरज ॥२९॥

जब सब घर वालों ने भोजन कर लिया तब जयराम भाई ने श्री जी से विश्राम करने के लिये विनती की । तब श्री जी ने कहा कि मैं तुम्हारे घर आराम करने के लिये नही आया हूं बल्कि तुम्हारी आतमा को जगाने के लिए आया हूं ।

तुम्हें माया से काढ़नें, हम आये इन काज ।
तुम छोड़ों मुरदार को, याद करो श्री राज ॥३०॥

तुम्हें इस मोह माया के जाल से निकालने के लिए आया हूं तुम इस मुरदार दुनियां को छोड़ कर श्री राजजी महाराज को याद करो ।

फेर बैठे चरचा करने, ब्रज को जो बरनन ।
देखो पगले आपनें, क्यों कर भरे सैंयन ॥३१॥

फिर चर्चा शुरू हो गई तथा ब्रज का दृष्टान्त देते हुए श्री जी ने बताया कि, क्या ब्रज में हमारे बाल बच्चे एवं कुटुम्ब परिवार नही थे ? सब कुछ होते हुए भी हम हमेशा धनी की याद में रहते थे । अपनी उस चाल को देखो कि माया में रहते हुए भी हमारी रहनी क्या थी ?

कैसा प्रेम तुम से, ब्रज में करते श्री राज ।
कौन भाँत तुम चलते, करते माया का काज ॥३२॥

श्री राजजी महाराज भी किस तरह से हमारे साथ प्रेम की लीला करते थे तथा माया का काम करते हुए भी हमारी कैसी रहनी थी ?

कुटुम्ब परिवार सब थें, रहते चित्त उदास ।
तुमको एक श्री राज बिना, और ना रहती आस ॥३३॥

बाल बच्चे कुटुम्ब परिवार ब्रज में सब कुछ था लेकिन उनकी तरफ से चित्त सदा उदास रहता था तथा एक श्री राज के चरणों के बिना माया की कोई आस रहती ही नही थी ।

बैठे थे घर अपने, चित्त श्री राज के चरण ।
हिरे फिरे टहल में, रहे प्रेमैं में मगन ॥३४॥

अपने घरों में बैठे होने पर भी चित्त धनी के चरणों में लगा रहता था । और माया का सब काम करते हुए भी श्री राजजी महाराज में मग्न रहते थे ।

Nijanand App

कोई ना लगता तुमको, इन माया को नेम ।
रहों सदा छके जोस में, आठों जाम इन प्रेम ॥३५॥

माया के किसी भी कर्मकाण्ड या सामाजिक रीति रिवाज को हम देखते ही नही थे बल्कि आठों पहर श्री राजजी के प्रेम में मस्त रहते थे ।

तो फेर आए जब रास में, किया गौपदवच्छ संसार ।
नजरों कछु न आइया, आड़े परवरदिगार ॥३६॥

इस तरह से भरपूर अनन्य प्रेम की लीला देखने के बाद जब हम रास में आये तो संसार को छोड़ते समय यह मोह का सागर गाय के बछड़े के खुर के गड्ढे के समान लगा और सब कुछ छोड़ कर धनी के चरणों में जाते समय संसार का कोई भी सगा सम्बन्धी या तन का मोह भी हमें रोक नही सका ।

क्योंकर जोगमाया मिने, बदले तुम आकार ।
जोगमाया नें बीच में, नये क्यों कराये सिनगार ॥३७॥

और योगमाया में जाकर किस तरह से नये तन धारण किए तथा कैसे उन पर नया श्रृँगार किया ।

तुम क्यों उथले किये राज सो, साम सामें बचन ।
क्यों कर तुमको राज नें, दिखाय वृन्दावन ॥३८॥

और योगमाया में पहुंच कर श्री राजजी महाराज के उथले वचनों का किस हिम्मत के साथ हमने उत्तर दिया तथा फिर किस तरह से श्री राजजी महाराज ने हमें अखंड वृन्दावन दिखाया ।

क्यों कर तित खेले तुम मिलके ब्रज का साथ ।
क्यों कर राज रमे तुमसों, क्यों खेले लेके बाथ ॥३९॥

किस तरह से सब सुन्दर साथ जिन्होंने मिल कर ब्रज की लीला खेली थी तथा रास की भी लीला की, किस तरह श्री राजजी महाराज हमारे साथ प्रेम की लीला खेले थे तथा हम भी किस तरह श्री राजजी का आलिंगन लेकर खेले थे ।

क्योंकर तुम सुख में, होय गए मग्न ।
क्यों अंतरध्यान होय के, विरह की दई अगिन ॥४०॥

किस प्रकार हम रास लीला के सुख में मग्न हो गए थे और श्री राज जी को भूल गए थे तो कैसे हमें पहचान कराने के लिए श्री राज जी ने अर्न्तध्यान होकर हमे विरह की अग्नि से निर्मल किया और अपने निज स्वरूप की पहचान कराई ।

Nijanand App

महामति कहे ए साथ जी, ए दीप की बीतक ।
अजूं और बहुत है, सो कहों ग्रहे माफक ॥४१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी ! यह जयराम कंसारा जो दीप बन्दर में रहते थे उनके घर की बीतक है । अभी दीप बन्दर की और बीतक शेष है जो अब कहता हूं ।

(प्रकरण २०, चौपाई ११८)

फेर कहे सुकन जयराम को, दीप में श्रीजीयें जब ।
रास लीला याद करते, पहिले कह्या सनमन्ध को सबब ॥१॥

अब आप श्री जी जब जयराम भाई के घर दीप बन्दर में थे तो उन्होंने रास की लीला की याद कराते हुए बताया कि हमारा सम्बन्ध श्री राजजी से था परन्तु रास में अक्षर की आतम तथा जोश धनी धाम का था । उनके साथ लीला करते हुए यह भूल गए थे कि हमारा घर परमधाम है इसलिए श्री राजजी महाराज अन्तर्ध्यान हो गए तथा विरहा देकर हमें मूल स्वरूप की याद दिलाई ।

फेर तुमही प्रगटे क्योंकर, क्योंकर भाना सोक ।
फेर राज सों मिलके, करने लगे जोक ॥२॥

फिर श्री राजजी ने अपने निज स्वरूप तथा निज श्रृँगार से आकर हमारे विरह को दूर किया तथा एक-एक गोपी और एक-एक कान्हा के रूप में होकर हमें अपार सुख दिए फिर खूब हांस-विनोद के साथ लीला की ।

क्यों कर जमुना त्रट, लगे थे करन झीलन ।
क्यों कर सिनगार करके, याद करी बातें मोमिन ॥३॥

इसके बाद यमुना तट पर किस तरह से जाकर झीलना किया तथा कैसे सबने नया श्रृंगार किया था, उन बातों को याद करो ।

क्योंकर तुम आसन किया, तापर बैठे श्री राज ।
क्यों घेर बैठे श्री राज को, अरूगावन के काज ॥४॥

झीलना करने के बाद उतारे हुए वस्त्रों का आसन बनाकर उस पर कैसे श्री राज को बिठाया था तथा हम सब सखियां अरूगावने के वास्ते किस तरह श्री राज जी को घेर कर बैठी थी ।

Nijanand App